जेर का रूके रहना

गर्भकाल की आखिरी अवस्था में गर्भपात

अंडकोष की सूजन

घुटनों में पानी भरना (Hygroma)

ब्रूसैलोसिस

बचाव व रोकथाम

डॉ. दिनेश मित्तल, डॉ. महावीर सिंह,
डॉ. एन. के. महाजन

Under ICAR Project on:

OUTREACH PROGRAMME ON ZOONOTIC DISEASES

पशु जन स्वास्थय एवं रोग व्यापकीय विज्ञान विभाग

लाला लाजपत राय
पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार–125004

Funded by:

Indian Council of Agricultural Research, Government of India, New Delhi

Implemented by:

Department of Veterinary Public Health and Epidemiology, LUVAS, Hisar, Haryana

ब्रूसैलोसिस रोग :

ब्रूसैलोसिस एक छूत की बीमारी है जो कि ब्रूसैला नामक जीवाणुओं द्वारा फैलती है। यह बीमारी गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और सुअर में मुख्य तौर पर पाई जाती है। यह बीमारी संक्रमित पशुओं से मनुष्यों में भी फैल जाती है।

ब्रूसैलोसिस रोग के मुख्य लक्षण :

- गभावस्था की आखिरी अवस्था में में बच्चे का गिर जाना (गर्भपात)
- गर्भनाल (जेर) का अन्दर रह जाना व बच्चेदानी में संक्रमण
- मादा पशुओं में बांझपन की समस्या का बढना
- नर पशुओं के अंडकोष में सूजन व नपुंसकता को समस्या
- पशुओं के घुटनों में पानी भर जाना (Hygroma)

ब्रूसैलोसिस रोग का फैलना :

गर्भपात होने के बाद इस बीमारी के जीवाणु अत्याधिक मात्रा में गर्भनाल तथा योनि स्त्राव में पाए जाते है । यह बीमारी संक्रमित पशुओं की जेर तथा योनि स्त्राव के सम्पक में आने से स्वस्थ पशुओं और मनुष्यों में फैलती है । मनुष्यों में ब्रूसैलोसिस रोग संक्रमित पशुओं का कच्चा दूध पीने से भी फैल सकता है।

ब्रूसैलोसिस रोग की जॉच :

संक्रमित पशुओं में गर्भकाल की आखिरी अवस्था में गर्भपात होने पर इस बीमारी की जांच जरूर करवाएं। इस बीमारी की जॉच नजदीकी पशु चिकित्सालय या केन्द्रीय प्रयोगशाला, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, हिसार में करवाई जा सकती है।

पशुओं की बीमारी की जॉच RBPT, Standand Tube Agglutination Test, ELISA आदि से की जाती है। बीमार पशु की प्रयोगशाला में जांच करवाने के लिए पशु चिकित्सक की सहायता से खून का नमूना नई सिरींज में लें। खून लेने के बाद उसे एक घण्टे तक छाया में रखें और खून जम जाने के बाद नजदीकी प्रयोगशाला में भिजवा दें। गर्भपात होने के 21 दिन बाद फिर से खून की जाच करवानी चाहिए। बीमार पशुओं से खून लेते समय सावधानो रखें ताकि स्वय को जीवाणुओं का संकमण ना हो।

बीमारी से बचाव तथा रोकथाम :

इस बीमारी का पशुओं में इलाज नहीं है। पशुओं में टीकाकरण अपनाकर ही इस बीमारी से बचा जा सकता है।

- ✓ *Brucella abortus* strain S-19 वैक्सीन इस बीमारो की रोकथाम के लिए प्रयोग में लाई जाती है। यह टीका 4–8 महीने की बछड़ी/कटड़ी में लगाया जाता है।
- ✓ नर पशुओं में इस बीमारी का टीकाकरण नहीं करना चाहिए। पशुओं में टीकाकरण करते समय सावधानी रखें तथा आखों के ऊपर चश्मा व हाथो मे रबर के दस्तानो का प्रयोग जरूर करें।
- ✓ नए पशुओं को फार्म पर लाने से पहले बीमारी की जॉच करवाएं व उन्हें पुराने पशुओं से कम से कम एक महीने तक अलग रखें।
- ✓ संभव हो तो एक महीने बाद दोबारा जॉच करवा कर ही उन्हे पुराने पशुओं में मिलाएं ।
- ✓ अगर किसी पशु का गर्भपात हो जाए तो गर्भनाल व भ्रूण को सही तरीके से गहरा गड्डा खोद कर दबाएं।
- ✓ किसी अच्छे कीटाणुनाशक घोल का जैसे कि 2% formaldehyde, फिनाइल, चूने का घोल, 2-3% caustic soda आदि का फर्श व दीवारों पर नियमित छिड़काव करें।
- ✓ पशुओं के खून की नजदीकी प्रयोगशाला में जांच करवाए तथा पशु चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।
- ✓ पशु फार्म पर स्वच्छता व उचित प्रबंधन का खास ख्याल रखें।